RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

जॉन डीवी के शैक्षिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता

डॉ रम्भा कुमारी

व्याख्यता– करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर , झारखण्ड

ARTICLE DETAILS
Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
दार्शनिक शिक्षा शास्त्री प्रयोगवादी शिक्षा.

ABSTRACT
जॉन डीवी 20 वीं शताब्दी के एक अत्यंत महान प्रसिद्ध अमेरिकी दार्शनिक और शिक्षा शास्त्री थे। अपनी प्रयोगवादी शिक्षा के द्वारा उन्होंने केवल अमेरिका की शिक्षा को ही नहीं वरन् सारे विश्व की शिक्षा पद्धितियों को प्रभावित किया है। उनका प्रभाव आधुनिक शिक्षा पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ये बाल केन्द्रित शिक्षा के लिए परियोजना, अनुभव, प्रयोगशाला विधियों तथा प्रगतिशील विद्यालय को प्राथमिकता दिए। इन्होंने शिक्षा को आजीवन चलने वाली ऐसी प्रक्रिया माना है। ये वैयक्तिकता का विकास सामाजिक वातावरण में करने पर बल दिए है।

आर्दशवाद : प्रकृतिवाद और यर्थाथवाद ये महत्वपूर्ण विचार–धाराएँ मानव समाज को प्रभावित किया। आदर्शवाद सबसे प्राचीन विचारधारा थी जिसनें आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना पर बल दिया। इसके बाद प्रकृतिवाद आया जिसने मनुष्य को प्रकृति के साथ समायोजन का पाठ पढ़ाया। तत्पश्चात यर्थाथवादी दर्शन का प्रादुर्भाव हुआ जिसने इंद्रिय प्रशिक्षण पर बल दिया और यर्थाथ ज्ञान प्राप्त करने पर ज़ोर दिया। लेकिन समय, परिस्थिति व आवश्यकता के बदलने के साथ एक नई विचारधारा ने जन्म लिया जिसके प्रेणेता जॉन डीवी थे। इस वैज्ञानिक विचारधारा को प्रयोगवाद या प्रयोजनवाद के नाम से जानते है। डीवी ने इस नई शैक्षिक विचारधारा को पूरे विश्व के लिए वरदान स्वरूप दिया। आधुनिक शिक्षा पद्धति इस विचारधारा के साथ बालक का सम्पूर्ण विकास के लिए तटस्थ है। आज के वैज्ञानिक युग में डीवी का शिक्षा दर्शन विश्व में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

शिक्षा का अर्थ

जॉन डीवी का विचार है कि बालक कुछ जन्मजात शक्तियों के साथ ही पैदा होता है। आज तक जितने भी शिक्षाशास्त्री हुए हैं , सबका यही सिद्धांत रहा है कि शिक्षा का उद्देश्य बालक के भावी जीवन के लिए सहायक होना है। जॉन डीवी ने इस सिद्धांत का खण्डन करते हुए कहा कि शिक्षा स्वयं ही जीवन है, वह जीवन के लिए तैयारी नहीं है। इनके अनुसार **''शिक्षा अनुभवों के सतत् पुनर्निर्माण के माध्यम से जीने की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति में उन समस्त क्षमताओं का विकास है, जो उसे अपने पर्यावरण पर नियन्त्रण रखने और अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करने के लिए समर्थ बनाता है।''**

अपने दार्शनिक विचारधारा के आधार पर जॉन डीवी ने शिक्षा का आमूल्य परिवर्त्तन करने के निमित नवीन शिक्षा सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। जॉन डीवी के अनुसार :–

''शिक्षा अनुभव और विकास का एक साधन है जिसमें आदान–प्रदान तथा सहयोग की क्रिया निहित होती है।''

जॉन डीवी ने शिक्षा को निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया माना है, क्योंकि जीवन में पूर्ण प्राप्त और शिक्षा में अन्तिम उपलब्धि को वह स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार मनुष्य के सामने नित्य नवीन समस्याएँ उपस्थित होती रहती है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य को इन परिस्थितियों के अनुकूल अपने को बदलने में सहायक हाती है।

डीवी के शब्दों में **''शिक्षा जीवन की सामाजिक निरूतरता है।''** अतः शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया है।

शिक्षा के उद्देश्य

जॉन डीवी प्रयोजनवादी है उनका शिक्षा के किसी पूर्व निश्चित उद्देश्य में विश्वास नहीं है। वे कहते हैं कि ''शिक्षा का सदैव तात्कालिक उद्देश्य होता है और जहाँ तक क्रिया शिक्षाप्रद होती है, वहां तक शिक्षा उस साध्य को प्राप्त करती है।'' उनका मानना है कि शिक्षा का कोई उद्देश्य है, तो यही है कि शिक्षा के माध्यम से मनुष्यों में ऐसे गुणों और क्षमताओं का विकास किया जाए कि मनुष्य अपने वर्तमान जीवन को कुशलतापूर्वक जी सके और अपने भावी जीवन का मार्ग प्रशस्त कर सके। इसलिए वे देश और काल की परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित किये जाने के पक्ष में है। उन्होंने शिक्षा द्वारा कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने पर बल दिया है।

1) अनुभवों का पुनर्निर्माण व पर्यावरण के साथ समायोजन :–

मानव जीवन गतिशील एवं परिवर्त्तनशील है अतः उसकी शिक्षा भी गतिशील एवं परिवर्त्तनशील होनी चाहिए। अगर शिक्षा का कोई उद्देश्य होना चाहिए तो ये कि मनुष्य अपने जीवन की गतिशीलता के साथ अपने आपको पर्यावरण के साथ समायोजित करता चले।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

2) सामाजिक कुशलता का विकास :–

समाजिक दृष्टि से डीवी का शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक कुशलता प्राप्त करना है। सामाजिक कुशलता का अभिप्राय यह है कि व्यक्ति को इतना योग्य बनाना कि वह समाज के सभी आवश्यक कार्यो को कुशलतापूर्वक कर सके। सामाजिक जीवन में दक्षता प्राप्त कर सकें और अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

3) जनतंत्रीय मूल्यों का विकास :–

डीवी लोकतंत्रीय समाज के समर्थक थे। उनका मानना था कि एक व्यक्ति में सात प्रकार की क्षमताएँ होनी चाहिए यथा–स्वास्थय, क्रिया करने की क्षमता, योग्य गृहस्थ, व्यवसाय, नागरिकता, अवकाश काल का उचित उपयोग व नैतिकता। शिक्षा के माध्यम से इन मूल्यों को विकास सम्भव है। अतः समाज के सभी कार्यों में कुशलतापूर्वक भाग लेने के लिए इन मूल्यों का विकास आवश्यक है जो शिक्षा का उद्देश्य भी है।

4) सार्वभौमिक चेतना का विकास :–

डीवी के अनुसार बालक में सार्वभौमिक चेतना उत्पन्न करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। वह शिक्षा द्वारा ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करे जिससे प्रत्येक बालक को सम्पूर्ण मानव जाति के सामाजिक अभ्युत्थान में सक्रिय योग देने के अवसर मिल सकें। इससे मनुष्य में परस्पर सहयोग और सामंजस्य की स्थापना होगी।

शिक्षा का पाठ्यक्रम

जॉन डीवी का विश्वास था कि अभी तक पाठ्यक्रम में क्रियाओं का स्थान नहीं है वरन् विषयों का है। इसलिए प्रारम्भ में ऐसी ही क्रियाओं का समावेश पाठ्यक्रम में किया जाये जो अविकसित बालकों के बुद्धि के अनुसार ही है और धीरे–धीरे उन क्रियाओं को जटिल समस्याओं के अनुरूप ढाल दिया जाए। जॉन डीवी ने समाज की आवश्यकताओं क्रियाओं, उपयोगिता, व्यावहारिकता तथा प्रयोगत्मकता पर आधारित पाठ्यक्रम बनाने के लिए कुछ सिद्धांतों का निर्धारण किया है जो निम्नलिखित है–

1) उपयोगिता का सिद्धांत :–

भोजन, आवास, वस्त्र, घरेलू बाजार, विनिमय तथा इनसे सम्बन्धित क्रिया–कलाप पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए क्योंकि ये ही मानव तथा समाज की मूलभूत आवश्यकताएँ एवं समस्याएँ है।

अतः पाठ्यक्रम में उन विषयों व क्रियाओं को स्थान दिया जाना चाहिए जो इन समस्याओं के सामाधान में सहायता दें।

2) लचीलेपन का सिद्धांत :–

जॉन डीवी ऐसे पाठ्यक्रम का समर्थन करते है जिसे बालक की रूचि अवस्था और आवश्यकतानुसार बदला जा सके ताकि सभी बच्चे अपनी रूचि, क्षमता तथा योग्यतानुसार पढ़ सके।

3) सहसम्बन्ध का सिद्धांत :–

डीवी का मानना है कि सभी विषयों को सह–सम्बन्धित रूप से पढ़ाया जाना चाहिए क्योंकि सभी विषयों को अलग–अलग करके शिक्षा देना अमनोवैज्ञानिक तथा अव्यवहारिक है। विषयों के सहसम्बन्ध से बालक सरलता से सीख सकेंगे। इस ढंग से पढ़ाने से एक विषय के ज्ञान का अनुभव दूसरे विषयों के ज्ञानार्जन में सहायक होता है।

4) क्रियाशील अथवा अनुभव का सिद्धांत :–

पाठ्यक्रम बालक के वर्त्तमान क्रियाशीलता अथवा अनुभव से सम्बधित होना चाहिए जिनसे बच्चे नए मूल्य बना सकें। पाठ्यक्रम में बालकों में चिन्तन एवं विवेक को बढ़ाने वाले गुण होने चाहिए। इसके लिए क्रियाशीलता प्रयोग एवं अनुभव के अवसर पाठ्यक्रम में होने चाहिए।

इस प्रकार डीवी का मानना है कि बालक में चार प्रकार की रूचियाँ दिखलाई पड़ती है, यथा बातचीत और विचारों का आदान–प्रदान, खोज रचना और कलात्मक अभिवृत्ति। इन रूचियों के आधार पर पाठ्यक्रम में भाषा, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, सिलाई, चित्र–कला, हस्त–कला, संगीत आदि को पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया है।

शिक्षण विधियाँ

जॉन डीवी का यह मानना था कि प्रत्येक बालक का मस्तिष्क एक समान नहीं होता है इसलिए प्रत्येक बालक के लिए एक ही प्रकार की शिक्षण पद्धति लाभप्रद नहीं हो सकती है अतः ऐसी शिक्षण पद्धति होना चाहिए जो बालक के जीवन से संबंधित हो तथा जिसमें क्रियाशीलता, व्यावहारिकता अनुभव आदि का समावेश हो। डीवी ने शिक्षणपद्धति को दो सिद्धांतो पर आधारित किया। प्रथम क्रिया द्वारा अथवा अनुभव द्वारा सीखने का सिद्धांत। इनका मानना है कि बालक को क्रिया के माध्यम से शिक्षित करना चाहिए। उनके सामने ऐसी परिस्थितियाँ प्रस्तुत करनी चाहिए कि वे उस समस्या से बाहर निकलने का मार्ग ढूंढ़े और भौतिक और सामाजिक वातावरण की अनेक समस्याओं का सरलतापूर्वक सामाधान करन सीख सकें। द्वितीय–रूचि का सिद्धांत अर्थात बालक को उसके रूचियों इच्छाओं, योग्ताओं एवं क्षमताओं के अनुसार योजना बनाने तथा उसे क्रियान्वित करने के अवसर प्रदान करें। डीवी के अनुसार मुख्य शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित है–

1) करके सीखना

RRIJM 2015, All Rights Reserved

2) परियोजना विधि
3) प्रयोग विधि
4) समस्या सामाधान विधि
5) सह संबंध विधि

डीवी और अनुशासन

डीवी दमनात्मक अनुशासन में विश्वास नहीं करते हैं। डीवी के अनुसार अनुशासन व्यक्ति की आत्मा की

शिक्षा है, जिससे व्यक्ति को शक्ति मिलती है। अनुशासन के विषय में इनके दो प्रकार के विचार हैः–

1) **सामाजिक अनुशासन** :– डीवी के अनुसार सामाजिक अनुशासन विद्यालय के सामाजिक क्रियाकलापों एवं

वातावरण से सिखाया जाना चाहिए।

2) **सकारात्मक अनुशासन** :– डीवी के अनुसार विद्यालय में बच्चों को साकारात्मक अनुशासन सिखाना चाहिए।

ये शारीरिक दण्ड के खिलाफ थे। उनका कहना है कि यदि एक बालक अपनी रूचि के अनुसार विषय का

चयन करता है तो यह अनुशासनहीनता नहीं है। अतः डीवी का मानना है कि विद्यालय की व्यवस्था ऐसी

परिस्थिति को जन्म दे जहाँ बालक आत्म–संयम, आत्मनियंत्रण करना सीखें।

डीवी और विद्यालय

विद्यालय, व्यक्ति का विकास तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाया गया है। विद्यालय समाज का लघुरूप है। विद्यालय में घरेलू उघोग–धंधे, पारिवारिक क्रियाओं एवं जीवन की दैनिक आदतों की शिक्षा दी जानी चाहिए। डीवी विद्यालय को आदर्श तथा विस्तृत परिवार मानते है जहाँ बालकों की सामाजिक भावना का विकास होता है। डीवी का कहना है कि–**''सच्चा चिन्तन तभी सम्भव है जहाँ परीक्षण का अवसर प्राप्त हो।''** डीवी के शब्दों में **''विद्यालय एक सामाजिक संस्था है, शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया होने के कारण विद्यालय वह स्थान है जो सामुदायिक जीवन का निर्माण करता है जिसमें वे समस्त साधन केन्द्रित होते हैं जो बालक को अपनी शक्ति को सामाजिक उद्देश्य के लिए प्रयोग करने की योग्यता प्रदान करते हैं।''** (सिंह, ओ0 पी0 2004, पृ0 133–134)

शिक्षक का स्थान

डीवी स्वयं एक शिक्षक थे अतः शिक्षकीय दायित्व का उन्हें गहन अनुभव था। डीवी के अनुसार शिक्षक का स्थान मित्र, दार्शनिक तथा मार्गदर्शक का है। वह समाज का प्रतिनिधि है। उनके अनुसार बच्चों को समस्या–समाधान के लिए प्रेरित करने का दायित्व शिक्षकों पर है। शिक्षक को सूक्ष्म और संसाधनपूर्ण होना चाहिए ताकि वह परियोजना विधि का संचालन कुशलतापूर्वक कर सकें तथा वे नये मूल्य का निर्माण कर सकें। बालक के ऊपर अपने विचार शिक्षक को लादने नहीं चाहिए।

शिक्षक को दो बातों का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है–

1) बालकों की रूचियों का ज्ञान
2) समाज की बदलती हुई परिस्थितियों का बोध

आधुनिक शिक्षा पर डीवी का प्रभाव

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। समय एवं परिस्थितियों के साथ इसमें परिवर्तन अवश्यभावी है। डीवी का आधुनिकयुग के महान विचारकों में अद्वितीय स्थान हैं जिसमें विश्व भर में शिक्षा के सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रभावित किया है। आधुनिक प्रगतिशील शिक्षा का उन्हें अग्रदूत कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। प्रो0 बागले तो जॉन डीवी को केवल अमेरिका का ही नहीं, वरन विश्व के शिक्षाशास्त्रियों का नायक कहते हैं। इनकी आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव निम्नलिखित हैं :–

1) **शिक्षा पद्धति पर प्रभाव** :– आधुनिक शिक्षा–व्यवस्था में डीवी का सबसे अधिक प्रभाव शिक्षा–प्रणाली पर दिखलाइ पड़ता है। वह शिक्षा–प्रणाली को बालक के व्यक्तिगत रूचियों और योग्यताओं के अनुसार बदलना चाहता है। उनके विचारों के प्रभाव से आधुनि विद्यालयों में सक्रिय शिक्षा दी जाती है,जिसका एक उदाहरण एक्टीविटी स्कूल है। योजना पद्धति डीवी के विचारों का ही परिणाम है।

2) **पाठ्यक्रम पर प्रभाव** :– डीवी ने कहा है कि पाठ्यक्रम के विषयों का चुनाव करते समय बालक की व्यक्तिगत रूचियों और योग्यताओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के खेलों, रचनाओं, वस्तुओं और औजारों के प्रयोग तथा निरीक्षण आदि को विशेष महत्त्व दिया गया है। हस्तकला, चित्रकला को भी पाठ्यक्रम में विशेष स्थान दिया गया है।

3) **शिक्षा के लक्ष्यों का प्रभाव** :– डीवी ने विद्यालय में बालको में सामाजिक गुणों के विकास पर विशेष जोर दिया है। आधुनिक विद्यालयों में इन उद्देश्यों को शिक्षा के लक्ष्यों में शामिल कर लिया गया है।

4) **अनुशासन की विधि का प्रभाव** :– डीवी के प्रभाव से आधुनिक विद्यालयों में बालकों से स्वतः कार्य क्रियान्वित कराये जाते हैं जिससे उन्हें स्वशासन का प्रशिक्षण मिलता है। बालकों को यह ज्ञान दिया जाता है कि वे सूझ–बूझ का प्रयोग करें और वैज्ञानिक प्रवृति को अपनाए जिससे बालक अनुशासित होगें।

5) **सार्वभौम शिक्षा** :– आधुनिक शिक्षा में वैज्ञानिक और सामाजिक प्रवृति डीवी का योगदान है। उनके अनुसार शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता है। वह जीवन की तैयारी

नहीं, बल्कि स्वंय जीवन है। उसका लक्ष्य व्यक्ति और समाज दोनों का विकास है। अतः डीवी के शिक्षा–पद्धति से व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक सर्वांगीण विकास होता है।

उपसंहार

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अमेरिकी शिक्षा शास्त्री जॉन डीवी एक गहन अध्येता और नवीन विचारों वाले विचारक थे। इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रवृतियों पर बल दिया। डीवी ने तत्कालिकता तथा उपयोगिता को शिक्षा के उद्देश्यों में महत्त्व दिया। बाल–केन्द्रित शिक्षा, परियोजना, अनुभव तथा प्रयोगशाला, प्रोजेक्ट विधि को महत्त्व देते थे। डीवी के अनुसार विद्यालय समान का लघुरूप होना चाहिए जिसमें समस्त सामाजिक गुण विकसित किए जा सकें इन्होंने शिक्षा को रूढ़ियों से बाहर लाकर आधुनिकीकरण का जामा पहनाया। इनके इन्हीं योगदानों के लिए एक महोदय ने लिखा हैः–

"शिक्षा में हम जॉन डीवी की उन सेवाओं के लिए बहुत आभारी हैं जिनके द्वारा उन्होंने ज्ञान के पुराने स्थिर आदर्शो के संचय को चुनौती दी तथा शिक्षा को वर्त्तमान जीवन की आवश्यकताओं के सम्पर्क में लाया तथा इसे सिद्धांत बताया कि शिक्षा और दर्शन को समकालीन समस्याओं पर विचार करना चाहिए।"

(सक्सैना व पाण्डेय, 2003, पृ 188)

संदर्भ

- डीवी, जॉन और डेवी एवेलिन, 1915. स्कूल्स ऑफ़ टोमारी. ई.पी. दत्तन एंड कंपनी. न्यूयार्क. 681. फ़िफ्थ एवेन्यू.
- डीवी, जॉन. 1916. डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन–एन इंट्रोडक्शन टू द फ़िलोसोफ़ी ऑफ़ एजुकेशन. मैकमिलन.न्यूयार्क
- ––––––. 1902. द चाइल्ड एंड द करिकुलम. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस. शिकागो.
- ––––––. 2007. शिक्षा के दर्शन की जरूरत. शिक्षा–विमर्श. नव–दिस. 2007. वर्ष 9.अंक 6. पृ. 5–11
- त्यागी, जी.एस.डी. और पी. डी. पाठक. 2010. शिक्षा के सामान्य सिद्धांत. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
- सक्सैना, स्वरूप. , एन. आर. और के.पी. पाण्डेय. 2003. शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षाशास्त्री. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- सिंह ओ. पी. 2004. शिक्षा दर्शन एवं शिक्षाशास्त्री. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
- शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार ,प्रो0 एस0 पी0 रूहेला (2011)
- भारत में शिक्षा का विकास, संध्या सिंहा (2013)
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत , एन0 आर0 स्वरूप सक्सेन , संजय कुमार (2016)

RRIJM 2015, All Rights Reserved